आने वाला कल...

कड़ी संख्या 2

आखिर क्या है ये एआई...

अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वय: बी. के. त्यागी

पात्र

कैप्टन श्रीकांत– **करीब 24 वर्ष, फौज में कमांडो है**

मेजर राम– **करीब 45 वर्ष, आंतकवादी विरोधी गतिविधियों में माहिर**

मेजर सरन– **करीब 42 वर्ष, फौज में आईटी विशेषज्ञ**

सुबेदार राघव– **48 वर्ष, कैप्टन श्रीकांत के साथ पोस्टिड**

दृश्य 1

(युद्ध की आवाजें, कभी एक धमाका तो कहीं दूसरा, तेजी से गोलियां चलने की आवाजें...फिर अचानक से शांति...)

मेजर राम– कैप्टन श्रीकांत तुम्हारा सॉफ्टवेयर तो बिल्कुल सटीक निकला, दुश्मन ने ठीक सेक्टर फाइव से ही घुसने की कोशिश की...बहुत बढ़िया...

श्रीकांत– थैंक्स मेजर राम सर, पर सर मेरा तो बस सुझाव था, काम तो सारा मेजर सरन की टीम का है...

राम– हां, अब लगता है युद्ध में जीत एआई ही तय करेगी...जॉली गुड़...

दृश्य परिवर्तन का संगीत

दृश्य 2

कैप्टन श्रीकांत– सर, सुबेदार जाधव जी ठीक कह रहे हैं, अगर हम एआई का उपयोग कर रहें हैं तो दुश्मन भी कर ही रहा होगा...ब्रिगेडियर साहब हमें एक बार फिर से पूरी योजना पर काम करना होगा...

ब्रिगेडियर– ठीक कहा कैप्टन श्रीकांत, मेजर राम आप, कैप्टन श्रीकांत और सुबेदार जाधव और मेजर सरन, एक बार फिर से पूरा प्लान चैक करो, मुझे सुबह पांच बजे रिपोर्ट करो, तब तक वेट एंड वॉच...

चारों एक साथ– यस सर...

दृश्य परिवर्तन का संगीत...

दृश्य 3

(केतली में पानी उबलने की आवाज)

श्रीकांत– बैठिए सर, मैं कॉफी का पानी लाता हूं, सुबेदार राघव आप कॉफी या...

सुबेदर राघव– (कड़क आवाज में) अरे सर आज कॉफी ही ठीक है...बाकी दुश्मनों का पूरा मंसूबा खत्म करने के बाद...

जोर से हंसी...

सरन– मेजर राम, मुझे लगता है ब्रिगेडियर साहब, चाहते हैं कि हम दोबारा सभी लूप होल्स चैक करलें...वैसे हमारा एआई आधारित सुरक्षा नेटवर्क कोई चूक नहीं छोड़ता...

सुबेदार– सर, पहली बात मुझे एआई क्या है, यह समझ नहीं आया और दूसरा जब दुश्मन के आने का रास्ता पता है तो सोचना क्या, चल कर उन्हे मजा चखाते हैं...

श्रीकांत– ये लीजिए कॉफी...(सब थैंक्यू बोलते हैं...) वैसे मेजर सरन हमारे पास अभी 15 घंटे हैं, क्या आप सुबेदार राघव की उलझन दूर कर सकते हैं कि ये एआई क्या है?

राम– अरे टाइम कम है...वैसे समझना तो मैं भी चाहूंगा...पर कल की धुसपैठ रोकने के बाद...

सरन– हां, ये ठीक रहेगा...वैसे सुबेदार राघव में आपको इतना बता देता हूं कि पिछले बीस साल का डाटा हमने जमा किया और अपने दो सौ के करीब इंटेलिजेंस ऑफिसरों के दिए डाटा और उनके सोचने के तरीकों का एनालिसेस...अं... विश्लेषण किया...और फिर ऐसा सॉफ्टवेयर तैयार किया, जिसमें हर वो परिस्थिति और हालात देखने, सोचने की क्षमता हो जैसा हमारे सबसे तेज अधिकारी सोच सकते हैं...बस, अब ये सॉफ्टवेयर कहां से दुश्मन घुसपैठ की कोशिश करेगा इसका ठीक–ठीक आंकलन करके बता देता है...और उसी के अनुसार हम दुश्मन के स्वागत की तैयारी करते हैं...

राघव– और कहीं दुश्मन ज्यादा चालाक निकला तो...एकबार एकसाथ आठ जगह से घुसपैठ की कोशिश हुई थी, वो हमारी सैनिक सतर्क थे, वरना कम से कम पचास आतंकी तो धुस ही गए थे...

श्रीकांत– अरे...अरे...अभी उलझने का समय नहीं है, ठीक है सुबेदार राघव जी ने हमसे अधिक युद्ध और मुठभेड़ें देखी हैं, पर दुश्मन को निपटाकर आराम से एआई पर चर्चा करेंगे...वैसे एआई अभी तक काफी सटीक बैठी है...

राम– चलिए, तो सुबेदार राधव आप ए वन टुकड़ी के साथ यहां...श्रीकांत आप यहां और मैं इधर रहूंगा...

सरन– ठीक है मेजर राम, और हमारी सूचना के अनुसार दुश्मन की संख्या करीब तीन सौ होगी और साथ ही इसबार वो खाना कम लेकर आएंगे, इसलिए घनी आबादी वाले क्षेत्र से धुसने की कोशिश करेंगे...

राघव– अच्छा खाना कम और हथियार ज्यादा...और आबादी के पास इसलिए कि खाना किसी घर से ले लेंगे...या छीन लेंगे...हूं...

सरन– देखा सुबेदार राघव...जो आपने कहा वो सभी हमारे एआई आधारित सॉफ्टवेयर ने पहले ही सोच रखा है...

श्रीकांत– चलिए देश के लिए जो टेक्नोलॉजी काम आए, वो ही बढ़िया...

राम– तो सभी को अपनी अपनी जिम्मेदारियां स्पष्ट हैं...एकबार फिर देख लेते हैं... (आवाज फेड होती जाती है...) ये यहां से मोर्टार...और यहां से...

दृश्य परिवर्तन का संगीत

दृश्य 4

(रेडियो पर फुसफुसा के बात करने की आवाज)

राम– अल्फा टू चार्ली...अल्फा टू चार्ली...

श्रीकांत– चार्ली...ओवर...

राम– ये करीब तीन सौ चार सौ हैं और सभी तुम्हारे सैक्टर की ओर आ रहे हैं... सुबेदार राघव तुम्हारी लोकेशन पर पहुंच रहे हैं...ऑल द बेस्ट...ओवर एंड आउट...

(तड़ातड़ गोलियां चलने की आवाजें...कुछ घमाके भी...मशीनगन की आवाज...)

श्रीकांत– कोई भी आतंकी सीमा पार ना कर पाएं, हां...ऐसे ही...सिपाही सुनील...आप चार सिपाही ले जाओ और जाकर बायीं ओर से फायरिंग शुरू करो...यहां मैं देखता हूं...

सुनील– जी जनाब...

(कुछ लोगों ने तेजी से जाने की आवाज...गोलियां चल रही है...तभी तेज धमाका होता है)

श्रीकांत– **(चिल्लाता है)** आाह...आ...

सिपाही– अरे श्रीकांत साहब को बम के छर्रे लगे हैं...डॉक्टर...

श्रीकांत– (चिल्लाकर) नहीं कोई अपनी जगह से नहीं हटेगा...मैं ठीक हूं...जबतक सुबेदार राघव अपनी टुकड़ी के साथ नहीं आते हमें इन्हे रोके रखना है...फॉयर...

(तेज गोलाबारी की आवाज...)

सिपाही– साहब, दो घंटे हो गए हैं, आपका खून भी काफी बह गया है, हमने सभी आतंकवादियों को घेर लिया है...आप अब बेस हॉस्पिटल चले जाओ...

श्रीकांत– **(थोड़ा कराहते हुए)** आह...नहीं...नहीं सुरेंदर सिंह अभी सुबेदार राघव बस आने ही वाले हैं, तबतक दुश्मन के सामने से मैं नही हटूंगा...लगता है इसबार काफी हथियार लाएं हैं, मेजर सरन ने ठीक ही कहा था, कोई नहीं हमारी तैयार भी पूरी है...तुम फॉयरिंग करते रहो...आह...

सिपाही– साहब, आपका काफी खून बह गया है, इन्हे तो हम संभाल लेंगे...आप के कारण ही उस घमाके से हम बच गए...लेकिन अब आप चलो...आप काफी घायल हो...

श्रीकांत– **डांटकर**– नहीं...मैं भी नहीं जाउंगा और कोई भी अपनी पोजिशन नहीं छोड़ेगा... सुबेदार राघव बस आने वाले हैं...

राघव– आने वाले नहीं, कैप्टन श्रीकांत मैं आ गया...आप निश्चिंत रहो...एक भी आतंकवादी अब बचकर नहीं जाने वाला...जय हिंद...सब पोजिशन ले लो...

(तेज गोलाबारी की आवाज...)

राघव– देखिए कैप्टन श्रीकांत...देखिए कैसे भाग रहे हैं...आदेश हो तो हम भी पीछे जाएं.. .इनकी दोबारा इधर आने की हिम्मत नहीं होगी...

श्रीकांत– नहीं सुबेदार राघव...बस फॉयरिंग करते रहिए और लाइन नहीं क्रॉस करनी है... आपकी युनिट ने सही समय पर आकर सब संभाल लिया...**(बेहोश होते हुए आवाज लड़खड़ा जाती है...)** थैं...क्स...

राघव– श्रीकांत साहब को जल्दी लेकर जाओ...चार लोग...जल्दी...मेडिक...मेडिक...

(तेज गोलाबारी की आवाज में सुबेदार की आवाज फेड होती है...)

दृश्य 5

(शांत...काफी धीमे से रेडियो पर कोई पुराना गीत बज रहा है...गीत है– लग जा गले कि फिर ये हंसी रात हो ना हो...)

मेजर राम– हंसते हुए– अच्छा भई अस्पताल की शांति में किसी को याद किया जा रहा है.. .

श्रीकांत– अरे सर आप... जयहिंद सर, अरे मेजर सरन भी आएं हैं...जयहिंद सर...

मेजर सरन– जयहिंद श्रीकांत...तुमने तो होश में आने में ही पांच दिन लगा दिए...अब इतना भी कोई सोता है...**हंसी...**

मेजर राम– अरे मेजर सरन, हमारे श्रीकांत ने तीन गोलियां और सोलह छर्रे जो झेले थे...खैर सुनाओं अब कैसा लग रहा है...

श्रीकांत– बढ़िया मेजर राम...कल से मुझे चलाना भी शुरू किया है...डॉक्टर कह रहे थे कि तीन हफ्ते में ज्वाइन कर सकूंगा...

मेजर राम– ज्वाइन तो तुम कर ही लोगे पहले ठीक तो हो लो, वैसे मैं तुम्हारे माता–पिता से भी मिला था, वो कह रहे थे कि तुम शादी की मना कर रहे हो...

सरन– अरे कैसे कमांडो हो...शादी से घबराहट...

...तेज हंसी...

तभी तेजी से सल्यूट की तरह बूट पटकने के साथ तेज आवाज...

राघव– जयहिंद साहब...

सरन– **अरे**, सुबेदार राघव...प्वाइंट फाइव की घुसैपठ रोकने वाले हीरो...आइए...आइए... अरे वाह इतना बड़ा गुलदस्ता...

राघव– जयहिंद साबह...हीरो तो हमारे कैप्टन श्रीकांत हैं...साहब...इन्होंने मोर्चा नहीं छोड़ा...जीत के बाद ही बेहोश हुए...ये लीजिए साहब...

श्रीकांत– धन्यवाद राघव जी...ये नर्स को दे दीजिए...वो लगा देंगी...हां...हां, तो सुनाइए राघव जी, तो आज आपने भी छुट्टी ले ली...

राघव– नहीं साहब, दिल्ली काम से आया, तो सोचा आपका यहां इलाज चल रहा है, तो मिलता चलूं...काफी ठीक लग रहे हैं आप...

श्रीकांत– **हां** अब काफी ठीक हूं...

सरन– राघव जी अब हमारी एआई के बारे में क्या कहना है...

राम– अरे ये बात तुमने अच्छी छेड़ी मेजर सरन, आज तो मैं भी एआई को समझना चाहूंगा...असल में घर में बिटिया कुछ डेटा एनालिस्ट बनने की बात कर रही थी और बेटा कुछ ऑटोमेशन कह रहा था...मैने उन्हे पता तो नहीं लगने दिया कि

मुझे कुछ नहीं पता पर फिर भी अगली बार वो कुछ बोलें तो मैं भी कुछ तो कहूं...

...हंसी...

राघव– जी साहब, आज तो वो क्या है...अं...एआई...जरा इसे समझा ही दीजिए...वैसे गांव में तो बच्चा–बच्चा एआई जानता है...

श्रीकांत– अरे राघव जी वो एआई है आर्टिफिशियल इंसेमिनेशन यानी गाय–भैंसो में होने वाला कृत्रिम गर्भाधान और ये एआई है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कहें कृत्रिम बुद्धि या कृत्रिम प्रज्ञता...

राघव– अरे तभी मैं कहूं कि मिलिट्री में उस वाली एआई क्या काम...

...हंसी...

सरन– ठीक कहा राघव जी आपने, असल में एआई कोई नई चीज नहीं है, सच कहूं तो एक ऐसी मशीन बनाने की कोशिश जो खुद सोच सके और मानव के कार्यों में हाथ बंटा सके, जो हमारी तरह समझदार हो और हमारी कई सारी टॉस्क आसानी से कर सके...

राम– अच्छा जैसा साइंस फिक्शन में दिखाया जाता है, जैसे वो क्या कहते हैं बायोनिक मैन, ह्यूमनॉयड, एंडिरॉयड या बातें करता रोबोट...

श्रीकांत– हां राम सर कुछ ऐसा ही, पर आप काफी आगे चले गए...सरन सर, ये एआई पहले भी कई बार आ कर जा चुकी है ना...

सरन– हंसते हुए...ये कोई मौसी थोड़े ना है जो आएगी और जाएगी...

..हंसी...

हां, लेकिन तुम ठीक कह रहे हो श्रीकांत, पहले तीन बार तो एआई बड़े सपने लेकर आई और फेल ही होकर गई, वैसे विज्ञान कथाओं में एआई कई रूपों में आाई और उसे प्रभावित होकर कई रईसों ने एआई या उस समय कहें रोबोट आदि बनाने के लिए खूब पैसा भी देना शुरू किया, पर जब बात नहीं बनी तो फंड भी रुक गए कुछ काम भी धीमा हुआ...

श्रीकांत– वैसे राघव जी 1956 में अमरिका के डार्टमाउथ कॉलेज में एआई रिसर्च पर पहली कार्यशाला हुई, हांलाकि 1954 में ही चैकर्स खेल को सीखने के काम में कंप्यूटर को लगा दिया गया था...

सरन– ठीक कहा श्रीकांत...वैसे 1955 में कंप्यूटर वैज्ञानिक जॉन मेक्कार्थी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टर्म गढ़ने का श्रेय दिया जाता है, इन्होनें ही अपने दोस्तों के साथ मिलकर 1956 में अमरिका के डार्टमाउथ कॉलेज में एआई रिसर्च पर पहली कार्यशाला का आयोजन किया था...

राम– मैने सुना है कि अमरिका के डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस ने ही सबसे पहले काफी फंड देना शुरू किया था...

राघव– मेजर राम साहब ये चीटिंग हैं...आपने कहा था कि आपको कुछ नहीं पता तो मैं भी चुप था कि चलो मैं अकेला नहीं हूं, पर अब आप भी कुछ कुछ बताने लगे... ये चीटिंग हैं...

...तेज हंसी...

राम– अरे, राघव मुझे सच में कुछ नहीं पता ये तो बच्चों से कुछ–कुछ सुना था तो बोल दिया...बस अब चुप रहूंगा...

...हंसी...

सरन– हां, तो मैं बता रहा था, कि कैसे तब कुछ रोबोट भी बने, कई किताबें भी आईं लेकिन एआई ने वो कमाल नहीं दिखाया जैसे विज्ञान कथाओं में बताया जाता था...फिर फंड रूके और एआई का काम कुछ ठंड़ा पड़ा पर अंदरखाने काम चलता रहा...

श्रीकांत– पचास के दशक, फिर सत्तर के दशक और फिर अस्सी के दशक में भी एआई को लेकर कई सफलताएं मिली...1980 के दशक में एक्सपर्ट सिस्टम की व्यवसायिक सफलता ने फिर एकबार पूरे कार्यक्रम में जान फूंकी और तभी जापान के पांचवी पीढ़ी के कंप्यूटर कार्यक्रम ने और उम्मीदें जगाईं...

सरन– **लेकिन** 1987 के आते–आते लिस्प मशीन का बाजार गिरा और एआई फिर बेचारी बदनाम होकर एक लंबी नींद सो गई...और नब्बे के दशक का अंतिम दौर आया और इक्कीस वीं सदी का आरंभ हुआ और प्रचालन तंत्र, डाटा माइनिंग, चिकित्सा क्षेत्र में निदान और अन्य क्षेत्रों में तेजी से काम हुआ...ग्यारह मई 1997 में जब तत्कालीन शतरंज के चैंपियन गैरी कास्पारोव को डीप ब्लू नाम के एक कंप्यूटर ने हरा दिया तो पूरा जगत आश्चर्यचकित रह गया...

राम– हां, ये तो मुझे पता है, और बाद में वॉटसन नाम के कंप्यूटर प्रोग्राम ने जब 2011 में जेपर्डी नामक खेल में जब चैंपियनों को हराया तक मानव को सबसे बड़ा धक्का लगा, क्योंकि ये खेल तो प्रश्नोत्तरी का था, जिसमें बड़े–बड़े ज्ञानी हार जाते थे, लेकिन जो सबसे ज्ञानी थे, उसे वॉटसन कंप्यूटर प्रोग्राम ने हरा दिया था...

राघव– ठीक है साहब, मैं चलता हूं...मैं रैंक में छोटा हूं, तो आप सब अफसर मिलकर मुझे नीचा दिखाने में तुले हैं...ठीक श्रीकांत साहब आप जल्दी ठीक हो जाओ... जयहिंद...

राम– अरे राघव जी...अरे ये तो छोटी सी बात थी...

राघव– पर मुझे तो नहीं पता थी, साहब गांव में कभी कुट्टी डालना, कभी लकड़ी लाना, कभी भैंस नहलाना, हमारे पास टाइम ही नहीं था, ये सब जानने का...अब जानना चाह रहा हूं तो आप ही कांप्लेक्स दे रहे हो...

राम– अरे, राघव गांव का तो मैं भी हूं...लेकिन चलो अब मैं नहीं बोलूंगा...चलिए मेजर सरन आप बताओ...

राघव– साहब, आप बताओ...लेकिन कुछ काम का तो बताओ, ये शतरंज में जीत गया, प्रश्नोत्तरी जीत गया, जापान ने कुछ कर दिया...अरे साहब आप तो इतिहास ही बताने लगे...ये बताइए कि ये एआई काम कैसे करता या करती है और सच में, मैं अभी तक नहीं समझा कि ये है क्या?

सरन– अरे आप तो इसका आज के जमाने में हर रोज उपयोग कर रहे हो और इसे अधिक सक्षम बनाने में और मदद भी कर रहे हो...

राघव– **आश्चर्य से**– मैं और एआई की मदद वो कैसे?

श्रीकांत– आप के पास स्मार्टफोन है ना...

राघव– हां सर, बेटे ने दिया है...

श्रीकांत– **तो** राघव जी कभी ऐसा हुआ है कि आपने इसमें जूते या कपड़े ढूंढे हों या घर ही ढूंढा हो और फिर आप जिस साइट पर जाएं... वहां, वो ही उत्पाद दिखने लगे...

राघव– अरे सर कभी क्या, कल ही मैं, बच्चों के कहने पर नए पर्दे के डिजाइन ढूंढ रहा था, और आज अपने फोन पर न्यूज देखने गया तो उसमें भी पर्दों के विज्ञापन दिखा रहा है...

सरन– तो राघव जी आपके फोन ने कैसे समझा कि आप क्या ढूंढ रहे हैं और आपकी पसंद क्या है?

राघव– **तो**...तो ये एआई है?.

सरन– हां और क्या...असल में आजकल सब कुछ है डाटा...जितना डाटा होगा, आपका एआई सिस्टम उतनी ही जानकारी पाएगा और उतना होशियार होता चला जाएगा...

श्रीकांत– ठीक कहा मेजर सरन, आजकल तो कहते ही हैं कि डाटा ही किंग है...जिसके पास डाटा, वो ही बाजार का मालिक...

राम– श्रीकांत, ये कुछ ठीक से समझाओ...

सरन– मेजर राम, असल में एक आंकलन है कि मानव के दिमाग में करीब सौ अरब न्यूरॉन्स यानी तंत्रिका कोशिकाएं हैं...वैसे एक आंकलन ये भी है कि हमारी दूधिया आकाशगंगा में भी करीब सौ अरब तारे हैं...और कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि हम इन तारों की ही संताने हैं...तो सबकुछ कहीं ना कहीं जुड़ा हुआ है...

राम– अब श्रीकांत तुमने तो विज्ञान कथा बनानी शुरू कर दी...सौ अरब न्यूरॉन का एआई से क्या रिश्ता?

सरन– **मेजर** राम बहुत गहरा रिश्ता है...कंप्यूटर वैज्ञानियों ने ये आंकलन लगाया कि अगर सौ अरब लोगों का डाटा एक जगह आ जाए एक आर्टिफिशियल दिमाग तैयार हो सकता है...जहां एक डाटा एक न्यूरॉन की तरह कार्य करेगा और सौ अरब लोगों का डाटा बनाएगा आर्टिफिशियल न्यूरल सिस्टम...

राघव– हैं सर जी...क्या बना देगा?

श्रीकांत– आर्टिफिशियल न्यूरल सिस्टम या कहें एक कृत्रिम दिमाग...बस तभी से डाटा या आज की भाषा में कहें डेटा जमा करने की होड़ शुरू हुई और इसे प्रभाव भी नजर आने लगे...

राम– कैसे प्रभाव...

सरन– जैसे सोशल मिडिया डेटा कलेक्शन का सबसे बड़ा स्रोत है और दूसरा है?

राघव– डाटा जमा करने के लिए तो सर्वे होता है, दूसरा यही होगा सर्वेक्षण...

श्रीकांत– नहीं राघव जी, दूसरा सबसे बड़ा डेटा जमा करने का साधन है, मनोरंजन, और अब तो मनोरंजन आपके मोबाइल के जरिए होता है, और आप जब कोई भी एप्प डाउनलोड करते हैं तो बस ओके दबाते जाते हैं और एआई का सॉफ्टवेयर आपके फोन के सभी डाटा लेता जाता है, जैसे कांटेक्ट नंबर, फोटो आदि...अब सोचिए जिन्हे कभी टेक्नोलॉजी कंपनी कहते थे, जो आज भी दुनियां की टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दिग्गज कंपनियां हैं...वो मनोरंजन के क्षेत्र में क्यों आ रही हैं, जैसे ओटीटी...

राम– ओटीटी यानी ओवर द टॉप...जिसमें कई सीरियल, फिल्में आदि दिखाई जाती हैं, बस टीवी या फोन को नेट से जोड़ना होता है, और एप्प डाउनलोग करो, वो भी फ्री और कुछ कंपनियां तो बिना पैसे लिए ही फिल्में, सीरियल आदि दिखाती हैं...

सरन– बिल्कुल सही मेजर राम, और आपने एक बात सही पकड़ी कि लगभग सभी एप्प फ्री हैं...चाहे सोशल मीडिया हो या ओटीटी...सब फ्री...

राघव– मेजर साहब आपने चीटिंग तो कर ही ली, पर बात रोचक सी लग रही है, इसलिए मैं पूछ रहा हूं, कि साहब सब फ्री है तो अच्छा है, इसमें परेशानी कि क्या बात, अच्छा टाइम पास हो जाता है...

सरन– परेशानी कैसी राघव जी, लेकिन सबकुछ फ्री इसलिए है कि आपका डाटा मिल सके, आप कौन–सी फिल्म देखते हैं, कितनी देर देखते हैं, कौन–से सीरियल्स देखतें हैं और क्या–क्या देखते हैं, क्या खरीदते हैं...कितना खरीदते हैं, किस रंग का खरीदते हैं...ये ही सब डाटा तो चाहिए एक आर्टिफिशियल न्यूरल सिस्टम

बनाने के लिए और सोशल मिडिया ने इसमें बहुत योगदान दिया है, जिससे डाटा एनालिसेस करके, एल्गोरिदम्स बनाकर नए एआई आधारित समाधान विकसित किए जा रहे हैं...

राघव– अब, मेजर सरन मैं भी कुछ पूछ ही लूं...**(तभी कप प्लेट की आवाजें...)**

आदमी– साहब, ये कॉफी, बिस्कुट और सैंडविच सिस्टर ने भिजवाएं हैं...

राम– अरे वाह...थैंक यू सिस्टर...

सरन– वाह, ये बढ़िया रहा...लो श्रीकांत...लो सैंडविच भी लो...अच्छा यहां रख देता हूं... हां तो राघव जी आप क्या कह रहे थे...

राघव– अब क्या कहूं...मेजर सरन जी, आपने कहा कि वो क्या है एल्गोरिथम्स...अब ये मैं भी जानता हूं, क्योंकि मेरा भतीजा भी फ्रांस की एक कंपनी में इसी तरह का काम करता है और कह रहा था कि कंपनी ने ऐसा एल्गोरिथम बनाया है कि कोई भी व्यक्ति हो चाहे उसका बचपन का फोटो हो, कैमरा उसे भीड़ में से भी ढूंढ निकालता है...अब ये कैसे?

राम– मैं चला अब!!!

श्रीकांत– अरे क्यों सर...

राम– अब सुबेदार राघव चीटिंग कर रहे हैं, अभी तो कुछ नहीं पता था अब एल्गोरिथम बता रहे हैं...चीटिंग...

...तेज हंसी का ठहाका...

श्रीकांत– ये ही तो खासियत है कि इस एआई की... आज हम सभी के जीवन से कहीं ना कहीं जुड़ ही गई है...

सरन– **ठीक कहा** श्रीकांत, हां तो राघव जी आपने सही कहा कि ऐसे एल्गोरिथम बने हैं और सच कहें तो हमारे पास भी हैं, पुलिस के पास भी हैं कि अगर कोई प्लास्टिक सर्जरी भी करवा ले तो भी हम उसे पहचान सकते हैं...असल में नाक, आंखों के बीच का एक रेशिओ है जो हमेशा एक ही रहता है, और भी कई बाते हैं जो सिर्केट हैं...

राघव– लो साहब, हमसे भी सिर्केट... आपने तो फौज वाली बात कर दी...

सरन– तो यहां तो सब फौजी ही हैं...

–हंसी–

श्रीकांत– कभी खेल में जीत से शुरू हुई एआई की यात्रा आज स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर चालक रहित वाहनों और यहां तक की हमें कपड़ों के रंग तक चयन करवाने में सफल हो रही है...

राम– रंगों के चयन क्या अब तो सुना है लोगों की सोच पर भी प्रभाव डालने में सक्षम है...क्यों?

सरन– मेजर राम, इसपर तो मैं चुप ही रहूंगा...

–हंसी–

राघव– वैसे मेजर सरन मेरे देहाती दिमाग में एक बात आ रही ह, मेरी दादी कहती थी कि आदमी का दिमाग की बाते तो दस फीसदी ही पता चलती हैं, बाकी नब्बे फीसदी तो उसके मन में रहतीं हैं, तभी तो एक व्यक्ति दूसरे को बेवकूफ बनाने में सफल रहता है या कहें धूर्तता दिखाने में...

राम– वैसे राघव जी की इस बात से मैं भी इत्तेफाक रखता हूं...

श्रीकांत– अरे वाह, मेजर राम और राघव जी इस बात पूरी तरह सहमत हैं तो मैं भी, लेकिन इससे राघव जी आप कहना क्या चाहते हो?

राघव– बस श्रीकांत जी, मैं यही कहना चाह रहा हूं कि आप जिस मानव के डाटा पर अपना अं... आर्टिफिशियल न्यूरल सिस्टम यानी आर्टिफिशियल दिमाग बनाने जा रहे हैं, वो तो अपनी मन की नब्बे फीसदी बातें तो मन में रखता है और जो बताता है उसमें आधे से भी अधिक झूठ होता है...तो धूर्त लोगों के डाटा से आपका आर्टिफिशियल न्यूरल सिस्टम भी धूर्त बनेगा...बताइए...

सरन– अरे वाह, राघव जी आपने तो बहुत बड़ी बात कह दी, पूरी दुनिया के एआई के विशेषज्ञ इसी पर तो मत्था–पच्ची कर रहे हैं, कि एआई को भ्रष्ट होने से कैसे रोकें...असल में, एआई मानव का विकल्प नहीं हो सकती और ना ही हर समस्या का समाधान ही... लेकिन हां, बहुत क्रांतिकारी टेक्नोलॉजी है, जो पूरा मानव इतिहास बदलने की क्षमता रखती है...इसमें बहुत संभावनाएं हैं...

श्रीकांत– ठीक कहा मेजर सरन, अब वैसे एआई को उन्नत होने के लिए बहुत डाटा चाहिए, अब ड्राइवर लैस कारें बनी तो हैं, चल भी रही हैं, पर सही चिन्ह ना समझ पाने के कारण या कोई संकेत पर गलत निर्णय के कारण एक्सिडेंड भी हो रहे हैं, लेकिन टेक्नोलॉजी तो हम यानी मानव ही ला रहे हैं...इससे घबराने की नहीं बल्कि इसे समझकर अपने मतलब की बनाने की आवश्यकता है...

राम– सरन, क्या से सही कि हम क्या सोच रहे हैं, ये भी कंप्यूटर पढ़ने में सक्षम हो गया है?

राघव– सर्र...चलिए कोई बात नहीं...

–हल्की हंसी–

सरन– जी मेजर राम, असल में दिमाग की स्कैनिंग के द्वारा पता चला कि जब हम कोई चीज देखते हैं जैसे फोटो या पेड़ आदि तो दिमाग की न्यूरॉन्स में दिवाली की तरह अलग–अलग दिमाग के केंद्रों में रोशनी होती है...अब जैसे आपने अपनी कार को देखा तो आपके दिमाग में इंपल्स गई...सपंदन या कहें संवेग

हुआ तो कंप्यूटर ने इन्हे अलग–अलग रंग से पकड़ा...बिल्कुल रंग–बिरंगी रोशनियों की तरह...

श्रीकांत– अब जैसे कंप्यूटर से इलैक्ट्रोड्स आपके दिमाग में लगाए गए और आपने कंप्यूटर पर फोटो चलाई गई...जैसे चलिए डॉ. सी. वी. रामन की फोटो आपने देखी और आपके दिमाग में हुई इंपल्स...तरंगों की भागदौड़ को...कंप्यूटर ने रिकार्ड कर लिया अपनी मेमोरी में, और फिर जब आप अपने मन में कभी डॉ. रमना के बारे में सोचेंगे...तो बस कंप्यूटर आपके दिमाग के संकेतों के आधार पर डॉ. रामन की फोटो निकालकर स्क्रीन पर दिखा देगा...अब तो टेक्नोलॉजी ये बनाई जा रही है कि बिना कोई इलैक्ट्रोड्स आदि लगाए क्या दिमाग में दौड़ते इस करंट को पकड़ा जा सकता है...

राघव– क्यों मेजर सरन, क्या पकड़ा जा सकता है? अगर हां तो हम, किसी आतंकवादी के दिमाग में क्या चल रहा है इस आधार पर कोई वारदात होने से पहले ही उसे पकड़ सकते हैं, ये तो बढ़िया है...

सरन– अं...इसपर तो मैं चुप ही रहूंगा...

राघव– हैं...तो क्या मतलब सर ऐसा हो रहा है कि नहीं...क्या टेक्नोलॉजी ने दिमाग पढ़ना शुरू कर दिया है...

श्रीकांत– अरे राघव जी, टेक्नोलॉजी तो जैसे कहा गया है कि आग की तरह है...चाहे तो रोटी सेंक लो या फिर घर जला लो...ऐसा हर टेक्नोलॉजी के साथ है, अब न्यूक्लियर लो...अच्छा काम बिजली बनाना और बुरा काम बम बनाना...लेकिन ये तय है कि मानव के विकास की एक लंबी छलांग को नए रूप से परिभाषित करेगी एआई...

राम– वाह, श्रीकांत तुम्हारी इसी बात पर आज की सभा खत्म करते हैं...और जल्दी ठीक हो जाओ, तुम्हे नए मिशन पर जाना है...अरे हां, एक बात तो बताना हम भूल ही गए...

श्रीकांत– क्या सर?

सरन– बता दें सर...

राघव– बताइए सर क्या बात है?

राम और सरन एक साथ– आप दोनों को सरकार की ओर से वीरता पुरस्कार दिया जा रहा है...कांग्रेचुलेशन्स...

– तालियां–

राघव– थैंक्यू सर...

सरन– बहुत–बहुत मुबारक राघव जी...चलिए...तो कैप्टन श्रीकांत आप आराम कीजिए... फिर मिलते हैं...

राघव– सर बात तो अधूरी रह गई, पर कोई नहीं...कैप्टन रमन जी के ठीक हो जाने पर फिर मिलते हैं...

राम– हां, और तब तक आप और सवाल ढूंढते रहों...इट्स एन ऑर्डर...

राघव– चिल्लाकर– यस सर

– हंसी –

– समाप्त –